Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

# डॉ. अम्बेडकर का संस्कृत-प्रेम : संस्कृत में लिखित अम्बेडकर-साहित्य के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. दिलीप कुमार
पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, डॉ.अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली।

**Article Info**
Volume 5, Issue 4
Page Number : 103-114
**Publication Issue :**
July-August 2022
**Article History**
Accepted : 01 July 2022
Published : 20 July 2022

**शोधसारांश** – डॉ. अम्बेडकर शिक्षा को एक ऐसी कुंजी मानते थे जिससे ज्ञान का ताला खुल सकता है। उनके अनुसार सामाजिक परिवर्तन का माध्यम शिक्षा है। इस लेख में वर्णित संस्कृत में लिखित अम्बेडकर साहित्य में, उनके संस्कृत भाषा को पढ़ने की तीव्र इच्छा एवं संस्कृत के प्रति प्रेम को सम्यक् दृष्टि से दर्शाया है।

**मुख्य शब्द-** डॉ. अम्बेडकर, शिक्षा, संस्कृत, भाषा, सामाजिक, राजनैतिक, चिन्तक।

डॉ. अम्बेडकर एक महान शिक्षाविद श्रेष्ठ नीति निर्धारक तथा प्रखर चिन्तक थे। उन्होंने समाज की सभी समस्याओं को अपने अनुभवों के आधार पर समझा और अनुभव किया। समाज की वास्तविक समस्याओं को समझकर उनके समाधान के उपाय उन्होंने राजनैतिक, सामाजिक और शैक्षणिक परिप्रेक्ष्यों में खोजने का प्रयास किया। सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा एक उत्तम और अनिवार्य साधन है, ये बात उन्होंने प्रबलता से प्रतिपादित की। 'समाज में व्याप्त भेदभाव का अन्धेरा शिक्षा के प्रकाश के बिना दूर नहीं किया जा सकता' उनकी यह स्पष्ट कल्पना थी। 'दलित वर्ग शिक्षा से वंचित नहीं होना चाहिए तथा शिक्षा पर प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार होना चाहिए' यह डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक परिवर्तन तथा समाजवाद का सिद्धान्त था। 'शिक्षा के बिना मानव का सम्पूर्ण मानसिक विकास सम्भव नहीं। शिक्षा से ही मनुष्य के चरित्र का सम्पूर्ण विकास होता है। बिना शिक्षा के मानव पशु–तुल्य है। अत: प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा अवश्य ही सुलभ होनी चाहिए।'

डॉ. अम्बेडकर को महात्मा जोतिबा फुलेजी के शिक्षा विषयक विचार मान्य थे। कुल जी के अनुसार समासत: अशिक्षा के कारण ही दलितों की दुर्दशा हुई।

**डॉ. अम्बेडकर की शिक्षा-नीति एवं शिक्षा-दर्शन** :- डॉ. अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन को अधोलिखित बिन्दुओं के आधार पर समधिक स्पष्टतया समझा जा सकता है –

1. स्वयं उच्च–शिक्षित डॉ. अम्बेडकर,
2. डॉ. अम्बेडकर के शिक्षा–सम्बद्ध विचार और कार्य,
3. डॉ. अम्बेडकर के द्वारा संस्थापित शैक्षिक–संस्थाएँ,
4. डॉ. अम्बेडकर और पत्रकारिता,
5. अनिवार्य–शिक्षा के विषय में डॉ. अम्बेडकर का चिन्तन,
6. व्यक्तित्त्व–विकास के लिए शिक्षा का महत्त्व,
7. संवैधानिक–प्रणाली में शिक्षा,

**Copyright: ©** the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

8. स्त्री–शिक्षा, उसके विमर्श और समाजोत्थान,
9. संविधान में शिक्षा–विषयक प्रावधान,
10. डॉ. अम्बेडकर की शैक्षिक नीतियाँ और
11. डॉ. अम्बेडकर का शिक्षा–दर्शन।

वस्तुत: इन बिन्दुओं के आधार पर डॉ. अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन की रूपरेखा थोड़ी स्पष्ट हो सकती है तथा शिक्षा – शास्त्र तथा समाज–शास्त्र के अध्येताओं और शोधार्थियों के लिए यह उपयोगी हो सकता है।

07/11/1900 दिनांक को भीमराव अम्बेडकर सातारा के एक सरकारी विद्यालय में पहली कक्षा में प्रविष्ट कराये गये। इसके बाद उन्होंने मुम्बई में एक मराठा उच्च विद्यालय में अध्ययन किया। इस प्रकार अध्ययन करते हुए क्रमश: बाद में उन्होंने 1907 में मुम्बई युनिवर्सिटी से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर 03/01/1908 को उन्होंने एलफिंस्टन महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया। इसके बाद सन् 1912 की भीमराव ने बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। बी.ए. परीक्षा में भीमराव के अंक कम ही रहें, क्योंकि इस वर्ष उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा। दूसरे, महाविद्यालय में उनके सहपाठी उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे तथा वे भीमराव के प्रति घृणाभाव रखते थे। इसी कारण भीमराव पाठ्यक्रमेतर–ग्रन्थों को पढ़कर अपना मनोरंजन करते थे। भीम के लिए किताबें केवल मनोरंजन का साधन न थीं, अपितु ये ज्ञान प्राप्ति की उत्तम साधन भी थीं। किताबों से ही मुक्ति सम्भव है, यह उनकी स्पष्ट कल्पना थी।

दलितों को सामाजिक स्थिति में सुधार करने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने उनमें शिक्षा का प्रचार किया तथा उनमें शिक्षा के प्रति सत्प्रेरणा का संचार किया। शिक्षा से ही दलितों की स्थिति को बदला जा सकता है, यह उनका दृढ़ मत था। अन्त्यजों और दलितों में शिक्षा का प्रचार करने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने अनेक संस्थाएँ स्थापित कीं। उनमें सत्यासत्य (उचित–अनुचित) का बोध कराने के लिए उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने शिक्षा का प्रचार किया। उन्होंने अनेक बार देश के अनेक क्षेत्रों में जा जाकर अनेक सभाएँ आयोजित करके लोगों में शिक्षा के बारे में जागरण पैदा किया। दलित छात्रों में शिक्षा का विस्तृत प्रचार करने के लिए उन्होंने छात्रावास खोलने के लिए व नि:शुल्क शिक्षा उपलब्धि हेतु प्रयास किये।

इस प्रकार उन्होंने दलितों के मन में स्वाभिमान जगाकर उन्हें शिक्षा प्राप्ति के लिए तत्पर किया । दलित शिक्षा प्राप्ति के प्रति तैयार हो जाये, इसलिए उन्होंने उनके लिए अनेक प्रकार की सुविधा मुहैया कराने के प्रयास किये। डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के लिए नि:शुल्क पुस्तकों, विद्यालयों, भोजन तथा छात्रावासों की व्यवस्था कराई। 'अम्बेडकर–दर्शन महाकाव्य' में कवि के द्वारा इस विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया –

**दरिदेभ्यस्तु छात्रेभ्यो नि:शुल्कपुस्तकानि च।**

**शिक्षावासस्तथा भोज्यप्रबन्धोऽपि चकार ह।।**[1]

(भावार्थ गरीब छात्रों के लिए उन्होंने नि:शुल्क पुस्तकों, शिक्षा–व्यवस्था, छात्रावास तथा भोजन आदि की व्यवस्था की थी।)

डॉ. अम्बेडकर ने न सिर्फ शिक्षा सम्बन्धी विचार ही प्रकटित किये, अपितु उन्होंने समाज में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए अनेक शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना भी की। भीमशतक में यह विषय इसके कवि द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत किया गया –

[1]. अम्बेडकरदर्शनम् 4.13

**अस्पृश्यताविनाशाय प्रयासाः विविधाः कृताः ।**

**उद्घाटितास्तु शिक्षार्थं शिक्षाया आलयाः प्रियाः।।**[2]

(भावार्थ छूआ-छूत की समाप्ति के लिए डॉ. अम्बेडकर ने अनेक प्रकार के प्रवास किये तथा दलितों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने अनेक विद्यालय खोलें।)

08/07/1945 दिनांक को डॉ. अम्बेडकर ने 'पिपल्स एज्युकेशन सोसाइटी ऑफ इण्डिया' नामक संस्था की स्थापना की दलितों तथा पिछड़े वर्गों के शैक्षणिक विकास के में इस संस्था का विशिष्ट योगदान रहा।

'पिपल्स एज्युकेशन सोसाइटी ऑफ इण्डिया' के अन्तर्गत अनेक शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना और ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया। 1950 में डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने महाराष्ट्र के औरंगाबाद नगर में इसी संस्था के तत्त्वावधान में 'मिलिन्द महाविद्यालय की स्थापना की थी। इस संस्था के अन्तर्गत बम्बई में 'सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ लॉ' की भी स्थापना की गई। शिक्षा जगत में इस महाविद्यालय ने अभूतपूर्व कार्य किया। 'पिपल्स एज्युकेशन सोसाइटी ऑफ इण्डिया' ने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों तथा पत्रिकाओं का प्रकाशन करके शैक्षणिक जगत के इतिहास में एक अनूठा योगदान दिया। इस संस्था ने शिक्षा क्षेत्र को नई ऊर्जा प्रदान की।

इस संस्था के अन्तर्गत डॉ. अम्बेडकर ने निम्नोक्त महाविद्यालयों, विद्यालयों तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की –

1. सिद्धार्थ कॅालेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एण्ड कामर्स, मुम्बई- 1946
2. सिद्धार्थ कॅालेज ऑफ कामर्स एण्ड इकॉनोमिक्स, मुम्बई- 1953
3. सिद्धार्थ कॅालेज ऑफ लॉ, मुम्बई- 1953
4. मिलिन्द कॉलेज ऑफ आर्टस, औरंगाबाद- 1950
5. मिलिन्द कॉलेज ऑफ साइंस, औरंगाबाद- 1950
6. सिद्धार्थ रात्रिकालीन विद्यालय, मुम्बई- 1947
7. मिलिन्द बहुद्देश्यीय उच्च विद्यालय, औरंगाबाद- 1955
8. सन्त गाडगे महाराज चोखामेला विद्यार्थी वस्तीगृह, पण्डरपुर- 1949
9. मातोश्री रमाबाई अम्बेडकर विद्यार्थी आश्रम, दापोली- 1942

इस संस्था का इतिहास ही नहीं वर्तमान भी अत्यन्त समुज्ज्वल है। वर्तमान में इस संस्था के अन्तर्गत अधोलिखित शिक्षण संस्थाएँ भी कार्यरत हैं।

1. डॉ. अम्बेडकर कॉलेज ऑफ कामर्स एण्ड एकॉनोमिक्स, मुम्बई- 1972
2. डॉ. अम्बेडकर कॉलेज ऑफ लॉ, मुम्बई- 1977
3. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर कॅालेज ऑफ कामर्स एण्ड आर्ट्स, औरंगाबाद-1963
4. पिपल्स एज्युकेशन सोसायटी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, औरंगाबाद- 1994
5. डॉ. अम्बेडकर कॉलेज ऑफ लॉ, औरंगाबाद- 1968
6. पिपल्स एज्युकेशन सोसायटी कॉलेज ऑफ फिजीकल एज्युकेशन, औरंगाबाद- 1984
7. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर कालेज ऑफ कामर्स, आर्ट्स एण्ड साइंस, महाड़- 1961

[2]. भीमशतकम् 66

8. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर कॉलेज ऑफ कामर्स एण्ड आर्ट्स, यरवदा पूणे- 1985
9. सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ मास कम्युनिकेशन मुम्बई - 1965
10. सिद्धार्थ इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डस्ट्रीज एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, मुम्बई- 1967
11. मिलिन्द बहूद्देश्यीय पूर्व प्राथमिक व प्राथमिक विद्यालय, औरंगाबाद- 1976
12. मातोश्री रमाबाई अम्बेडकर उच्च विद्यालय, औरंगाबाद- 1965
13. गौतम विद्यालय, पण्डरपुर (सोलापुर) -1974
14. पिपल्स एज्युकेशन सोसायटी विद्यालय, नवी मुम्बई- 1978
15. पिपल्स एज्युकेशन सोसायटी अंग्रेजी माध्यम के. जी. विद्यालय, मुम्बई- 1983
16. पिपल्स एज्युकेशन सोसायटी नागसेन नर्सरी विद्यालय, बेंगलोर- 1984

**छात्रावास -**

1. सूबेदार सावड़कर विद्यार्थी आश्रम, महाड़ (रायगढ़) - 1978
2. सिद्धार्थ विहार हास्टेल, वडाला. मुम्बई- 1964
3. दी सम्राट अशोक इंस्टीट्यूट फॉर व्यायाम, स्पोर्ट्स एण्ड गेम्स, औरंगाबाद-1986

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने आरम्भ से ही अनिवार्य शिक्षा के विषय में अपना प्रस्ताव विभिन्न परिषदों तथा सभाओं में उपस्थापित किया था। महाड़ तालाब के आन्दोलन जैसे बहुत सारे आन्दोलनों के अवसर पर आपने अपने अनुयायियों को उद्बोधित किया कि 'प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करें। शिक्षा से मन सुसंस्कारित होते हैं तथा इससे व्यक्तित्त्व उन्नत होता है। शिक्षा से ही मानव उन्नति प्राप्त कर सकता है, यह उनकी स्पष्ट कल्पना थी। अनेक बार आपने अनिवार्य शिक्षा के विषय में ब्रिटिश शासकों से परामर्श करके सभी के लिए अनिवार्य शिक्षा का आन्दोलन चलाया।

डॉ. अम्बेडकर ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा को अनिवार्य बताया था। शिक्षा को उन्होंने दोमुही तलवार कहा था। शिक्षा से मानव सब कुछ साधित कर सकता है। यह उनका मत था। डॉ. भीमराव अम्बेडकर के मतानुसार, 'मनुष्य यदि शिक्षित होता हैं, तो वह अपना विकास कर सकता है, उसके विचार समधिक सुदृढ़, सुनियोजित और सुसंस्कृत होते हैं। वह समधिक योग्य और ज्ञान सम्पन्न होता है। इस प्रकार एक शिक्षित व्यक्ति अपना विकास कर ही सकता है। शिक्षा से मनुष्य की उन्नति हो सकती है तथा वह समाज का भी कल्याण के मार्गों को सोच-विचार सकता है।"

भारत के संविधान में डॉ. अम्बेडकर सर्ववर्गीय समाज के लिए अनेकविध शिक्षा-विषयक प्रावधान किये। संवैधानिक प्रणाली में सभी के लिए उन्होंने शिक्षा की आवश्यकता और महत्त्व को सविस्तर प्रतिपादित किया। संविधान में उपवर्णित शिक्षा विषयक प्रावधानों के कारण ही आज समाज के सभी तबके के लोगों के लिए शिक्षा सुलभ्य हो सकी। उनके ही प्रयासों के कारण स्त्री शिक्षा के अनेक नये आयाम विकसित हो सके।

डॉ. अम्बेडकर का मत था कि स्त्री-समाज के लिए शिक्षा की व्यवस्था अवश्य ही होनी चाहिए। उन्होंने हमेशा ही स्त्रियों की शिक्षा के प्रति चिन्ता प्रकट की। उनका कहना था कि यदि नारियाँ शिक्षित होंगी, तभी सही मायनों में राष्ट्र उन्नति कर सकता है। 'अम्बेडकर दर्शन' में भी यह भाव कवि के द्वारा प्रकट किया गया-

**शोषितवर्णविकासेन सदाचारबलेन च।**

**नारीशिक्षाप्रसारेण देश: प्रगतिमेष्यति।।**[3]

[3]. अम्बेडकरदर्शनम् 7.42

(भावार्थ- डॉ. भीमराव अम्बेडकर का मत था कि दलित वर्ग के विकास व उनमें सदाचार और संस्कारों की संस्थापना और नारी-शिक्षा के प्रसार से देश अवश्य ही प्रगति करेगा।)

आज का युग नारी समाज के लिए अत्यन्त निराशाजनक तथा दमनकारी युग है। देश में रोज ही कहीं न कहीं बलात्कार तथा अन्य प्रकार की महिला उत्पीड़न से सम्बन्धित घटना अवश्य ही पढ़ी-सुनी जाती है। बलात्कार की घटनाएँ तो अत्यन्त बढ़ गई हैं। बलात्कार की इस तरह की घटनाओं को सुन सुनकर मन विक्लव हो जाता है। डॉ. अम्बेडकर के मन में भी नारी सम्मान तथा नारी अभ्युत्थान के विषय में तत्कालीन समाज के दूषित आचरण के कारण अत्यन्त क्षोभ था। 'नारियाँ निश्चित रूप से आदर की पात्र हैं। वे भी पुरुषों के समान जीवन जीने के लिए पूर्णतया स्वतन्त्र होनी चाहिए' यह डॉ. अम्बेडकर का दृढ़ चिन्तन व अनुपम अभिमत था। बलात्कारों की घटनाओं के निरोध तथा महिलाओं द्वारा आत्म-रक्षा के लिए डॉ. अम्बेडकर ने महिलाओं के लिए अनेक उपाय बतायें थे।

'अम्बेडकर - दर्शन' के कर्ता ने उन उपायों को अपने काव्य में इस प्रकार अभिव्यक्ति दी है.

**कयापि योषिता सार्धं संग्रहणं भवेद्यदा।**

**शस्त्ररूपेण स्वदन्तान्प्रयुञ्जीथ स्वयं सदा ।।**

**तीक्ष्णदन्तैस्तदा नारी वृकरूपस्य सत्वरम्।**

**कर्तयेन्नासिका पुंसः पतिधर्ममनुस्मरन्।।**

**समाजेऽपि बहिर्गन्तुं लज्जयेत्येन चेतसि ।**

**पश्चात्तापस्य वहाँ च ज्वलेत्पुमानहर्निशम्।।**[4]

(भावार्थ किसी भी नारी के साथ यदि कोई जबरदस्ती हो, तो उसे शस्त्र के-रूप में हमेशा अपने दान्तों का प्रयोग करना चाहिए। अपने तीक्ष्ण दान्तों से नारी द्वारों वैसे नर-पिशाच की नाक को अपने पतिव्रत धर्म को याद करके एकदम काट देना - चाहिए, ताकि वह समाज के मध्य जाने से पूर्व मन में लज्जित हो जायें तथा पश्चात्ताप की अग्नि में भी रात-दिन जलता रहें।)

डॉ. अम्बेडकर ने अत्यन्त परिश्रम, दूरदर्शिता और सर्वजन हितेच्छा से भारतीय संविधान की रचना की। यद्यपि संविधान की रचना के लिए एक परिषद का गठन किया गया था, किन्तु इस परिषद के सदस्य निष्क्रिय होकर इस कार्य में डॉ. अम्बेडकर की अधिक सहायता न कर सके। अत: डॉ. अम्बेडकर ने ही पूर्ण रूप से संविधान की रचना का भार अपने कन्धों पर लेकर विश्व का सबसे उत्कृष्टतम. लोकतन्त्र का हिमायती, समता के भाव से पूर्णतया परिपूर्ण और विश्व का सबसे विशाल संविधान बनाया।

**डॉ. अम्बेडकर का संस्कृत-प्रेम** :- डॉ. अम्बेडकर के बाल्यकाल में अन्त्यज और शूद्र शिक्षाध्ययन नहीं कर सकते थे। शूद्रों के लिए विद्यालयों के द्वार बन्द थे। बाद में ब्रिटिश शासन के प्रभाव से धीरे-धीरे शैक्षणिक दृष्टि से अस्पृश्यों की स्थिति में परिवर्तन हो रहा था। धनञ्जय कीर विरचित 'डॉ. बाबासाहब आंबेडकर' नामक ग्रन्थ में शूद्रों की विद्याध्ययन से सम्बद्ध स्थिति इस प्रकार वर्णित है।

"ब्रिटिशों की राजसत्ता शुरू हुई थी और परिणामत: अस्पृश्यता की गहरी अमावस लुप्त हो रही थी। अस्पृश्य वर्ग की स्थिति में शैक्षणिक दृष्टि से धीरे-धीरे फर्क पड़ रहा था। अपने बाल्य काल के दिनों में अपने पिताजी के प्रभाव के कारण भीमराव की संस्कृताध्ययन में तीव्र इच्छा प्रबलतर होती गई। पारिवारिक संस्कार-वश वह संस्कृत का अध्ययन करना

[4]. अम्बेडकरदर्शनम् 7.69-71

चाहते थे किन्तु तब विद्यालय के किसी ब्राह्मण संस्कृत शिक्षक ने उन्हें संस्कृत पढ़ाने से इंकार कर दिया। 'अम्बेडकर दर्शन महाकाव्य' में कवि ने भीमराव के संस्कृताध्ययन सम्बन्धी विचार[5] इस प्रकार उपस्थापित किये –

**अहं संस्कृतभाषायामनुभवामि गौरवम् ।**

**अकामय महाविज्ञो भवेयं संस्कृतस्य वै।।[6]**

**पर विप्रयुरोश्चैव सङ्कीर्णभावहेतुना ।**

**अहं संस्कृतभाषाया: पण्डितो नाभवं तदा।।[7]**

(भावार्थ में संस्कृत भाषा को पढ़कर गौरव का अनुभव करता हूँ तथा मेरी इच्छा थी कि मैं संस्कृत का महान् विद्वान् बनूँ। किन्तु ब्राह्मण अध्यापक ने संकीर्ण विचारधारा के कारण मुझे संस्कृत नहीं पढ़ाया। इस कारण मैं उस समय संस्कृत भाषा का पण्डित नहीं बन पाया। )

'भीमायन महाकाव्य' के कवि ने भी इस विषय में इस प्रकार अपने विचार[8] उपस्थापित किये

जब भीमराव शाला में प्रविष्ट हुए तो उन्होंने संस्कृत को ही वैकल्पिक विषय के रूप में चुना, किन्तु एक धर्मान्ध बुद्धि वाले संस्कृत शिक्षक ने उनकी हीन जाति के कारण संस्कृत का अध्ययन निषिद्ध कर दिया था।[9]

इससे भीमराव अत्यन्त विषण्ण (निराश) हुए तथा इस कारण उनके पिताजी भी अत्यन्त खिन्न हो गये। तब उन्होंने निश्चय किया कि 'मैं संस्कृत भाषा में एक दिन अवश्य ही पटुत्व (कौशल) प्राप्त कर दिया।'[10]

बाद में एक अच्छे संस्कृतज्ञ की सहायता से उन्होंने गीर्वाण–गिर (संस्कृत–भाषा) का अध्ययन किया। उन्होंने रामायण–महाभारत आदि बहुत सारे धार्मिक ग्रन्थों का उनके मूल रूप में अध्ययन किया।[11]

'भीमाम्बेडकर शतक काव्य' में कवि ने डॉ. अम्बेडकर की संस्कृत के अध्ययन के विषय में तीव्र इच्छा को उपवर्णित किया। इसमें बताया गया कि भीमराव के बड़े भाई भी संस्कृत के प्रति अनुरागवान् थे किन्तु मूर्ख पण्डित शिक्षक के रवैये के कारण उन्हें संस्कृत के अध्ययन से वंचित होना पड़ा। बाद में उन्होंने स्वयं संस्कृत पढ़कर इस भाषा पर प्रभुता प्राप्त की। यथा–

भीम संस्कृत के अध्ययन में अत्यन्त समुत्सुक (इच्छुक) थे। इसी प्रकार उनके बड़े भाई भी संस्कृत के अनुरागी थे। किन्तु उनके विद्यालय में एक वर्ण और जाति का अभिमानी ब्राह्मण अध्यापक था, वह कैसे निम्न वर्ग तथा हीन जाति के छात्रों को संस्कृत पढ़ने दे सकता था? शिक्षक के द्वारा संस्कृत नहीं पढ़ाने से भीम और उनके बड़े भैया संस्कृत नहीं पढ़

---

5. अम्बेडकरदर्शनम् 2.13, 2.14
6. अम्बेडकरदर्शनम् 2.13
7. अम्बेडकरदर्शनम् 2.14
8. भीमायनम्
9. यदा प्रशालागतो भीम ऐच्छत् वैकल्पिका संस्कृतवाचमेव ।
   धर्मान्धसंस्कृतशिक्षकेण आसीनिषिद्धः स तु हीनजातिः ।।भीमायनम्
10. बभूव भीमोऽतितरां विषण्णः खिन्नोऽभवत् तस्य पिताऽपि तेन ।
    'अहं स्वयं संस्कृतवाक्प्रभुत्वं लप्स्ये' इति द्वाक्स च निश्चिकाय ।।भीमायनम्
11. सम्प्राप्य साह्यं पटुसंस्कृतज्ञाद् अध्यत गीर्वाणगिरं स कामम्।
    पपाठ रामायणभारतादि बहूनि चान्यानि स पुस्तकानि ।। भीमायनम्

सके। बाद में उन्होंने फारसी (परशियन) भाषा का अध्ययन करके सन्तोष किया। कालान्तर में भीम ने अपने ही प्रयत्नों तथा बुद्धि से संस्कृत भाषा में कौशल प्राप्त किया तथा उन्होंने इस भाषा में अपनी अत्यन्त निपुणता तथा श्रेष्ठता सिद्ध की।[12]

भीमराव अम्बेडकर अपने पिताजी से प्रेरित होकर संस्कृत पढ़ना चाहते थे। उन्हें स्तोत्र, सुभाषित और अन्य ज्ञानपूर्ण संस्कृत साहित्य सदा ही आकर्षित करता था। 'भोमायन महाकाव्य' के चतुर्थ सर्ग में कवि ने इसी विषय को कुछ इस अंदाज में प्रकटित किया। जैसे–

इस नई पाठशाला में रखा गया पीने का पानी भी अस्पृश्य भीम के लिए सदा ही निषिद्ध था। दुर्भाग्यवशात् उनकी यह शाला शासकीय होने पर भी इसमें अस्पृश्यता को प्रतिबन्धित नहीं किया गया था। भीम के पिता रामजी का स्वप्न था कि 'संस्कृत भाषा ज्ञान का भण्डार है तथा इसमें प्रवेश करना भी सुकर है, किन्तु उनके इस नितान्त रम्य स्वप्न को संस्कृत शिक्षक ने भीम को संस्कृत न पढ़ाकर नष्ट कर दिया। भीम को संस्कृत भाषा तथा उसमें उपनिबद्ध स्तोत्र आदि का पाठ अत्यन्त प्रिय था, किन्तु उनके अछूतपन के कारण विद्यालय में एक शिक्षक ने संस्कृत का अध्यापन निषेधित कर दिया था। इसके बाद उन्होंने अन्य उपाय न जानकर निराश होकर वैकल्पिक विषय के रूप में फारसी भाषा का अध्ययन किया। किन्तु बाद में उन्होंने अपने ही प्रयत्नों से स्वयं ही संस्कृत का अध्ययन अपनी ही इच्छा से किया।[13]

डॉ. म.ला. शहारे और डॉ. नलिनी अनिल के द्वारा विरचित 'बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर को संघर्षयात्रा एवं संदेश' नामक ग्रन्थ में वर्णन प्राप्त होता है कि डॉ. अम्बेडकर का संस्कृत के प्रति अतीव प्रेम था जब संस्कृत शिक्षक ने उन्हें संस्कृत नहीं पढ़ाई, तब वे अतीव दु:खी होकर कष्ट का अनुभव करने लगे तथा बिना इच्छा के भी फारसी भाषा पढ़ने लगे। कालान्तर में जर्मनी विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए संस्कृताध्ययन किया। इसी विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय की मदद से डॉ अम्बेडकर ने अपने परिश्रम से ही संस्कृत भाषा का अध्ययन किया। इस विषय को उन्होंने अपने ग्रन्थ में इस प्रकार लिखा

---

[12]. आसीत्समुत्सुको भीम: संस्कृताध्ययने पर: ।
तस्याग्रजस्तथैवासीत् संस्कृते ह्यनुरागवान् ।।भीमाम्बेडकरशतकम्
विप्रस्तत्राध्यापकोऽभूत् किन्तु वर्णानुरागवान् ।
अवर्णो हीनजातिस्तत् कथं स्यादवकाशभाक्।।भीमाम्बेडकरशतकम्
श्रीमो न संस्कृताध्येता न तद्भ्राता ततोऽभवत्।
पारसीकं वच: श्रुत्वा तौ लब्धौ कृतकृत्यताम्।।भीमाम्बेडकरशतकम्
भीम: स्वेन प्रयत्नेन स्वबुद्धया संपरिष्कृत:।
श्रेष्ठ: सिद्धो हि भाषायां तस्यां निपुणतां गत: ।।भीमाम्बेडकरशतकम्

[13]. नवप्रशालास्थितपेयतोयम् अस्पृश्यभीमस्य सदा निषिद्धम्।
अस्पृश्यतां नैव निनाय नाशं प्रशासकीयाऽपि तदीयशाला ।।भीमायनम्
'ज्ञानस्य राशि: खलु संस्कृता गीर् भीमस्य तस्यां सुकर: प्रवेश:।'
स्वप्न: स रामस्य नितान्तरम्य: प्रध्वंसित: संस्कृतशिक्षकेण ।। भीमायनम्
भीमाय गीर्वाणसरस्वती तत्स्तोत्रादिपाठाद् रुरुचे नितान्तम् ।
तदन्त्यजत्वात् प्रतिषिद्ध आसीत् अध्येतुमेतां गुरुणा तदानीम् ।। भीमायनम्
तत: स वैकल्पिकपारसीका पपाठ भाषामगतिर्हि भूत्वा ।
कालान्तरेण स्वयमेव भीम: पपाठ गीर्वाणगिरं यथेच्छम् ।।भीमायनम्

उनके पिताजी चाहते थे कि भीम को संस्कृत भाषा का अध्ययन करना चाहिए किन्तु अस्पृश्य वर्ग के छात्रों को संस्कृत पढ़ाने से धर्मप्रष्ट होता है. ऐसी शिक्षकों को मान्यता थी। अत एव अनिच्छा से उन्हें फारसी भाषा का अध्ययन करना पड़ा। फिर भी बाद में जर्मनी विश्वविद्यालय से डॉ. अम्बेडकर ने स्वपरिश्रम से संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। संस्कृत भाषा के प्रति उनके प्रेम का प्रमाण उनका यह कथन है मैं यद्यपि फारसी भाषा का अभ्यासक (अध्येता हूँ और कक्षा में 100 में से 90-95 अंक फारसी में प्राप्त होते थे फिर भी मैं यह स्वीकार करता हूं कि संस्कृत की तुलना में फारसी साहित्य कुछ भी नहीं है। संस्कृत में काव्य, काव्य-मीमांसा, अलंकारशास्त्र, नाटक, रामायण, महाभारत, दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र, गणित आदि सब कुछ है। ऐसी बात फारसी में नहीं है। मुझे संस्कृत पर गर्व है और संस्कृत भाषा का सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए. ऐसा विचार मेरे मन में रह रहकर आता था किन्तु शिक्षकों के दकियानूसी (रूढ़िवादी) विचारों के कारण मुझे संस्कृताध्ययन से वंचित रहना पड़ा था।

धनञ्जय कीर के द्वारा विरचित 'डॉ. बाबासाहब आंबेडकर' नामक ग्रन्थ में यही विषय इस प्रकार लिखा गया है.

**"विद्येनेच मनुष्या आले श्रेष्ठत्व या जगामाजी'**[14] (विद्या से ही मनुष्य इस जगत में श्रेष्ठत्व को प्राप्त करता है।) वचन पर रामजी की अटल श्रद्धा थी। उनकी यह धारणा थी कि इससे बड़प्पन बढ़ता है और मन तेजस्वी होता है। सूबेदार की यह महत्त्वाकांक्षा श्री कि बच्चे संस्कृत सीखें. बुद्धिमान् हो, पण्डित के रूप में मशहूर हो। उन्होंने तय किया कि आनन्दराव संस्कृत सीखे; किन्तु सातारा के उस माध्यमिक स्कूल में संस्कृत के अध्यापक ने जताया कि 'मैं महार के बच्चों को संस्कृत नहीं पढ़ाऊँगा।' संस्कृत का मतलब है वेद पठन की कुंजी शूहों और अतिशूद्रों के लिए वेदाध्ययन करना बड़ा अपराध था। यह अपराध करने वालों के कानों में सीसे का तप्त रस डालकर उसे मार डालना अथवा उसकी जबान काट देना; धर्म-ग्रन्थ प्रणीत सजा थी। अब भीम के अध्ययन में बहुत प्रगति हुई। हावर्ड की अंग्रेजी किताबों और तर्खडकर भाषान्तर पाठमाला की सहायता से भीम के पिताजी ने उसके अंग्रेजी विषय की अच्छी तैयारी करा ली थी। ये किताबें भीम ने कण्ठस्थ की थी। पर्यायवाची शब्द का उचित प्रयोग करने का पर्याप्त ज्ञान उसके पिताजी ने उसे दिया था। 'मेरे अंग्रेजी वक्तृत्व और ग्रन्थ-लेखन का श्रेय मेरे पिताजी को है'. यह बाबासाहब आंबेडकर कृतज्ञता से कहते थे। इसका मूल इतिहास ऐसा था। बच्चों को गणित विषय अच्छी तरह समझाने के लिए उन्होंने एक छोटी नोटबुक में गोखले के अंकगणित के सभी उदाहरण हल करके लिख दिये थे।

संस्कृत भाषा का अध्ययन बाद में बाबासाहब ने स्वयं मेहनत से किया। उस भाषा में प्रवीण होने की उनकी बड़ी इच्छा थी। संस्कृत भाषा पर उनका असीम प्रेम था। अपने बचपन के संस्कारों का संस्मरण डॉ. अम्बेडकर ने लिखा है। वे कहते हैं- 'सन् 1930 से डॉ. अम्बेडकर ने पं. नागच्या शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ किया। उन्होंने पाँच सालों तक नागप्पा शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया। नागप्पा शास्त्री से ही उन्होंने मूल रूप से बहुत सारे संस्कृत शास्त्रों का अध्ययन किया। इस प्रकार की जानकारी बेंगलोर से प्रकाशित सम्भाषण सन्देश पत्रिका में प्रकाशित एक लेख के द्वारा होती है, किन्तु अम्बेडकर वाङ्मय में नागप्पा शास्त्री से सम्बद्ध इस प्रकार की कोई जानकारी नहीं उपलब्ध होती। अस्तु, उस लेख के आधार पर ज्ञात होता है कि डॉ. अम्बेडकर ने नागप्पा शास्त्री से संस्कृत के शास्त्रों और ग्रन्थों का मूल रूप से अभ्यास किया था।" यहाँ यह ज्ञापनीय है कि नागप्पा शास्त्री ने महात्मा गान्धी को आत्मकथा का प्रथमतया संस्कृत भाषा में अनुवाद किया था तथा 1990 में श्रीमद्बुद्धभागवतम्' नामक महाकाव्य भी लिखा था। सम्भाषण सन्देश से ज्ञात होता है कि शास्त्रों में इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करने पर डॉ. अम्बेडकर ने स्वतन्त्र भारत में संस्कृत भाषा ही राजभाषा बननी

[14]. संस्कृताभिमानी डा. अम्बेडकर:, परिशिष्ट-1, पृ. 167

चाहिए, ऐसा प्रतिपादन किया था।" सन् 2003 में सम्भाषण सन्देश में डा. अम्बेडकर और संस्कृत के विषय में एक अन्य लेख प्रकाशित हुआ । 'अम्बेडकर: संस्कृतेन भाषते स्म!' नामक इस लेख में सन् 1949 में तत्कालीन समाचार पत्रों में डा. अम्बेडकर के द्वारा राजभाषा के विषय में संविधान सभा में प्रकटित विचारों तथा डा. अम्बेडकर के द्वारा संस्कृत भाषा में बात चीत करके उसकी व्यवहारिकता और श्रेष्ठता सिद्ध करने की बात को प्रमाणों के साथ विद्वान् लेखक श्री चमू कृष्ण शास्त्री ने प्रमाणित किया।

**डॉ. भीमराव अम्बेडकर के संस्कृत प्रेम-विषयक उद्धरण** :- यह सभी जानते हैं कि डॉ. अम्बेडकर बाल्यकाल में संस्कृत का अध्ययन करना चाहते थे किन्तु संस्कृत शिक्षक ने उन्हें संस्कृताध्यापन से निवारित किया। इससे भीमराव अत्यन्त दु:खी हो गये थे। एल. आर. बाली जी इस विषय में इस प्रकार लिखते है. "एलफिस्टन हाई स्कूल में भीमराव को एक अन्य चोट लगी, जो उन्हें समस्त जीवन न भूल सके। भीमराव संस्कृत पढ़ना चाहते थे, परन्तु स्कूल के अध्यापकों ने उन्हें संस्कृत विषय पढ़ने की अनुमति न दी विवश होकर भीमराव को फारसी पढ़नी पड़ी। उन्होंने कहा भी था– 'मुझे संस्कृत भाषा पर बहुत गर्व है, मैं चाहता था कि संस्कृत का विद्वान् बनूँ, परन्तु ब्राह्मण अध्यापक के संकीर्ण विचारों के कारण मैं संस्कृत पढ़ने से वंचित रह गया।[15] भीम शतक में डॉ. अम्बेडकर का संस्कृत के प्रति श्रद्धा भाव कवि ने इस प्रकार प्रतिपादित किया –

**संस्कृतं प्रति श्रद्धासीत् यस्य चित्ते निरन्तरम् ।**
**तस्यामेव सुवाण्यान्ते लिख्यते चरितं मया ।।[16]**

जिन (डॉ. अम्बेडकर) के मन में संस्कृत के प्रति सदा ही श्रद्धा थी. उसी सुवाणी (संस्कृत) में उनका (डॉ. अम्बेडकर का) जीवन चरित लिख रहा हूँ।

डॉ. अम्बेडकर न केवल संस्कृत के प्रति आकृष्ट थे, अपितु वे संस्कृतज्ञों के सम्पर्क में भी रहते थे। लन्दन में अपने अध्ययन काल में वे वहाँ रहने वाले एक संस्कृत विद्वान् के घर यदा कदा जाते आते रहते थे। उस संस्कृत विद्वान् के घर जाकर वे अतीव सुख और शान्ति का अनुभव करते थे, उसके परिवार के लोग भी अम्बेडकर के प्रति स्नेह भाव रखते थे।[17]

जब वे जर्मनी के बॉन विश्वविद्यालय में अध्ययन करते थे, तब वहाँ तीन महीने उन्होंने गम्भीरतया संस्कृत का अध्ययन किया। यहाँ पर उन्होंने अनेक संस्कृत शास्त्रों का अत्यन्त गहराई से अध्ययन किया।[18] इस विषय को भीमायन महाकाव्य में कवि ने इस प्रकार अभिव्यक्ति प्रदान की है –

**जर्मन् स्थितं विश्रुतविश्वविद्यागेहं गत: सोऽध्ययनाभिलाषी ।**
**तद्देशभाषां स पपाठ पूर्वम् अध्येत स फ्रेञ्चगिरं तथैव ।।**
**भाषाप्रभुत्वेन विराजमानो ज्ञानस्य कक्षां वितनीचकार ।**
**शास्त्रीयविज्ञानदवाङ्मयं च प्राधीत्य स ज्ञाननिधिं ततान ।।**

---

15. डॉ. आंबेडकर : जीवन और मिशन (1980), पृ. 13
16. भीमशतकम् 2
17. बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर की संघर्षयात्रा एवं सन्देश, डॉ. म.ला. शहारे, डॉ. नलिनी अनिल, पृ. 57
18. बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर की संघर्षयात्रा एवं सन्देश, डॉ. म.ला. शहारे, डॉ. नलिनी अनिल, पृ. 57

**कादम्बरी काव्य-कथा- निबन्ध-ग्रन्थान् अनेकान् स पपाठ तत्र ।**

**एवं नवीनान् विषयानवगाह्य कालेन विद्वन्मणितामवाप ।।**[19]

वं महान् अध्ययनाभिलाषी डॉ. अम्बेडकर जर्मन देश जाकर वहाँ के विश्व विश्रुत वॉन विश्वविद्यालय में पढ़ने लगे। वहाँ उन्होंने उस देश की भाषा (जर्मनी) का अध्ययन किया, इसी प्रकार वहाँ उन्होंने फ्रेंच भाषा का भी इसी तरह अध्ययन किया। भाषाओं पर प्रभुत्व प्राप्त करके वे भाषा-ज्ञानी के रूप में ज्ञान प्राप्त करके विद्वान् बनें और उन्होंने अपने ज्ञान को अतिशय बढ़ाया। संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध विज्ञान का अध्ययन करके उन्होंने महती विद्वत्ता प्राप्त की।

उन्होंने संस्कृत के कादम्बरी आदि काव्य, कथाएँ, निबन्ध प्रभृति अनेक ग्रन्थों को पढ़कर तथा नूतन विषयों का अवगाहन (समझ) कर बाद में वे विद्वन्मणि (विद्वानों में श्रेष्ठ) बन गये ।)

**डॉ. अम्बेडकर के राजभाषा के सन्दर्भ में विचार** :- राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के द्वारा एक ग्रन्थ 'संस्कृत - भारत की आत्मा तथा विवेक की वाणी' इस नाम से प्रकाशित किया गया. है। इस ग्रन्थ के अन्तर्गततया 'भारत की राजभाषा पर अम्बेडकर के विचार' यह लेख प्रकाशित हुआ है। इस आलेख में संस्कृत ही भारत की राजभाषा होनी चाहिए, इस प्रकार का प्रस्ताव डॉ अम्बेडकर ने संविधान सभा में उपस्थापित किया था। 10 सितम्बर, 1949 को 'अखिल भारतीय हरिजन संघ' की कार्यकारिणी में भी यह प्रस्ताव पारित होना चाहिए, यह डॉ. अम्बेडकर का अभिमत था, किन्तु वहाँ बी.पी. मौर्य नामक दलित युवक ने संस्कृत का विरोध करते हुए इससे किसी भी दशा में देश की राजभाषा नहीं बनाने की बात रखकर कठोर विरोध प्रस्तुत किया। बाद में इस संघ के द्वारा अपने विरोध के लिए किये खेद प्रकट किया गया। उसी खेद के प्रस्ताव को इस ग्रन्थ में 'अखिल भारतीय हरिजन संघ का अभिमत' इस शीर्षक के अन्तर्गत उल्लिखित किया गया। इस प्रस्ताव में बताया गया कि वी.पी. मौर्य आदि द्वारा संस्कृत को राजभाषा बनाना में अवरोध करना एक ऐतिहासिक गलती थी तथा इस अवरोध के लिए उन्हें बेहद दु:ख है।[20]

सन् 2003 में जून महीने में बेंगलोर से प्रकाशित संस्कृत भारती की पत्रिका सम्भाषण सन्देश में बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विषय में प्रकाशित लेख 'अम्बेडकर: संस्कृतेन भाषते स्म !' में भी लेखक चमू कृष्ण शास्त्री ने प्रमाणों के साथ इस विषय की पुष्टि की कि डॉ. अम्बेडकर संस्कृत को राजभाषा बनाना चाहते थे। आलेख में 1949 में प्रकाशित आज दी लीडर, द हिन्दू, स्टैट्समैन, हिन्दुस्तान, दी सनडे हिन्दूस्तान स्टैण्डर्ड, द नैशनल हेराल्ड इत्यादि समाचार पत्रों को स्कैन प्रतियाँ भी प्रकाशित की गई, जो नई दिल्ली के राष्ट्रिय अभिलेखागार से प्राप्त की गई थी।[21]

'भीमायन महाकाव्य' में भी कवि ने डॉ. अम्बेडकर के द्वारा संस्कृत को राजभाषा बनाने के प्रयासों को[22] इस प्रकार उपस्थापित किया -

**स्यात् संस्कृता वागपि राष्ट्रभाषा प्रस्तावमेनं स पुरश्चकार ।**
**आकर्ण्य भीमस्य वचस्तदानीं संसत्सदस्याश्चकिता बभूवु:।।**
**ज्ञातुं तदीयां सुरवाचि निष्ठां पृष्टस्तदा संसदि सांसदेन ।**
**गीर्वाणवाण्यैव तदा च भीम: प्रत्यब्रवीत् संस्कृतभाषयैव ।।**

---

[19]. भीमायनम् 6.44-46

[20]. संस्कृत- भारत की आत्मा तथा विवेक की वाणी, पृ. 4-6

[21]. अम्बेडकर: संस्कृतेन भाषते स्म, सम्भाषणसन्देश:, जून, 2003

[22].भीमायनम् समर्पणम्

(भावार्थ – डॉ. अम्बेडकर ने संस्कृत भाषा ही राजभाषा होनी चाहिए, यह प्रस्ताव संविधान की राजभाषा परिषद के समक्ष अत्यन्त पुरजोर तरीके से रखा था। उनका यह प्रस्ताव सुनकर तब वहाँ उपस्थित संसद सदस्य अत्यन्त आश्चर्य चकित हो गये।

संस्कृत के प्रति उनकी सच्ची निष्ठा को जानने के लिए संसद में एक सांसद द्वारा जब प्रश्न किया गया, तो उन्होंने संस्कृत में ही उत्तर देकर सबको चौका दिया था।)

संस्कृत आयोग के प्रतिवेदन में भी समुल्लिखित है कि हिन्दी को राजभाषा पद पर प्रतिष्ठापित करने के लिए संविधान सभा में अनेक प्रकार के गतिरोध थे, हिन्दी को ही राजभाषा बनाया जाना चाहिए, यह प्रस्ताव अत्यन्त कम मतों से पारित किया गया। संविधान सभा में राजभाषा विषयक यह प्रस्ताव संविधान में प्रस्तुत सभी विचारों में सबसे अन्त में विचारित किया गया, क्योंकि यह प्रस्ताव ही सर्वाधिक विवादास्पद होगा. इस प्रकार का पूर्वालोचन डॉ. अम्बेडकर ने पूर्व में ही कर लिया था । वस्तुत: ये संस्कृत को ही राजभाषा बनाने हेतु प्रस्तावक थे। अत्यन्त परिश्रम से उन्होंने संस्कृत को राजभाषा बनाने का मन बना लिया था।[23]

राजभाषा विषयक यह प्रस्ताव सितम्बर,1949 में संविधान सभा में उपस्थापित किया था। इस विषय में डॉ. अम्बेडकर ने संस्कृत ही राजभाषा होनी चाहिए, यह प्रस्ताव वहाँ उपस्थापित किया था। उस प्रस्ताव से सम्बन्धित जानकारी तत्कालीन समाचार–पत्रों में प्रकाशित हुई थी। वहीं विषय अब इण्टरनेट पर भी प्राप्त हो जाता है।

इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर ने संस्कृत ही राजभाषा और राष्ट्रभाषा होनी चाहिए. इस लिए अनेक प्रकार के प्रयास किये। भीमायन महाकाव्य में इसके कवि प्रा. प्रभाकर शङ्कर जोशी ने संस्कृत भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रयास किये, यह विषय अत्यन्त उत्कृष्टतया प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि – "संस्कृत भाषा के प्रति अतीव अनुरागी डॉ. भीमराव अम्बेडकर संस्कृत और इसके ज्ञान की महत्ता को जानते थे। इसलिए वे संस्कृत भाषा को ही हिन्दी के स्थान पर राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठापित करना चाहते थे। इसी कारण दलित महासंघ की कार्य सभा में उन्होंने गीर्वाणवाणी (संस्कृत भाषा) ही राष्ट्र भाषा बननी चाहिए, ऐसा प्रस्ताव उपस्थापित किया। उस कार्य सभा में डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने संस्कृत भाषा के वाङ्मय का माहात्म्य विशद करते हुए कहा– कि "संस्कृत भाषा ही भारतीय संस्कृति का आधार है। यह भाषा अनेक भारतीय भाषाओं की जननी है। अत: यह संस्कृत भाषा ही सभी विद्वानों द्वारा राष्ट्र–भाषा बनाने में निर्विरोध रूप में चुनी जा सकती है।[24]

वस्तुत: संस्कृत भाषा एक परिशुद्ध और पावन नदी की तरह प्रवाहमान भाषा है। भाषा कभी भी दुष्ट नहीं हो सकती। भाषा तो सञ्चार और विचार विनिमय को मांध्यमभूता होती है। संस्कृत एक पवित्र, परिशुद्ध और परिमार्जित भाषा है। इस भाषा में अद्भुत विचार और चिन्तन सामग्री उपलब्ध होती है। यदि इस भाषा में मानवता के विरुद्ध, भ्रष्ट और घृणित विचार उपलब्ध होते हैं, तो वे वर्जनीय, त्याज्य और हेय ही है, उन्हें त्याग देना चाहिए। कुछ स्वार्थी लोगों ने यदि संस्कृत के माध्यम से शास्त्रों के द्वारा घृणित विचार प्रस्तुत कर दिये तो उनके लिए उन स्वार्थी लोगों का ही दोष और अपराध है न कि भाषा का संस्कृत भाषा में विद्यमान गुण ही इसे राजभाषा पट पर प्रतिष्ठापित करने में सक्षम हैं।

भीमशतक के रचयिता के अनुसार डॉ. अम्बेडकर के मन में सर्वदा संस्कृत को राष्ट्रभाषा पद दिलाने के विषय में विचार चलते रहते थे–

---

[23]. संस्कृत आयोग का प्रतिवेदन, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय,वाराणसी, पृ. 249

[24]. भीमायनम्, 18.51–61

**राष्ट्रस्य भाषा भरतस्य भूमौ**

**गीर्वाणवाणी भवताद् विचारः।**

**चित्ते सदा यस्य विराजते स्म**

**सोऽयं जयेद् भीमवरो जगत्याम् ।।**[25]

(भावार्थ – भरत की भूमि (भारत देश) में इस देश की राष्ट्र–भाषा संस्कृत ही होनी चाहिए, ऐसा विचार जिसके चित्त में हमेशा विलसित रहता था. उस भीमवर (डॉ. भीमराव अम्बेडकर) की जगत में जय हो, जय हो ।)

इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर शिक्षा को एक ऐसी कुंजी मानते थे जिससे ज्ञान का ताला खुल सकता है। उनके अनुसार सामाजिक परिवर्तन का माध्यम शिक्षा है। इस लेख में वर्णित संस्कृत में लिखित अम्बेडकर साहित्य में, उनके संस्कृत भाषा को पढ़ने की तीव्र इच्छा एवं संस्कृत के प्रति प्रेम को सम्यक् दृष्टि से दर्शाया है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची


1. अम्बेडकरदर्शनम्, बलदेवसिंह मेहरा, देवेश पब्लिकेशन्स, अर्बन इस्टेट, रोहतक, 2009
2. भीमरावाम्बेडकरशतकम्, सुगतकविरत्नम् आचार्य शान्तभिक्षुशास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2012
3. भीमशतकम्, कविरत्नं श्रीकृष्णसेमवाल, दिल्ली संस्कृत अकादमी, नई दिल्ली, 2008
4. भीमायनम्, प्रो. प्रभाशंकर जोशी, झेलम, पत्रकारनगरी, पुणे, 2009–10
5. संस्कृतपुष्पमाला, नागपुर विद्यापीठ प्रकाशन, नागपुर, 1972
6. संस्कृताभिमानी डा. अम्बेडकरः, डा. प्रफुल्लः गडपालः, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2013
7. बुद्धधम्म, बुद्धिवाद व आंबेडकर, डॉ. सुरेन्द्र अज्ञात, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
8. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की संघर्ष–यात्रा एवं सन्देश, डॉ. नलिनी अनिल, डॉ. सहारे, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009


[25]. भीमशतकम् 98